विचार बिन्दु

जनता की आवाज़ ईश्वर की आवाज़ है। –कहावत

क्या ये हालात कभी नहीं बदलेंगे?

एक नागरिक के रूप में हम अपनी सरकारों द्वारा निर्धारित किए गए करों का समयबद्ध भुगतान करते हैं और उसी धन से हमारी सरकारें हमारे लिए आवश्यक सुख-सुविधाओं की व्यवस्था करती है। हमारे करों से ही इन सब सुविधाओं की व्यवस्था करने वाली सरकारें भी चलती हैं। समझ लेना बहुत ज़रूरी है कि सरकारें केवल हमारे वोटों से ही नहीं चलतीं, उन्हें चलाए रखने के लिए हमारे नोट (अर्थात हमारे द्वारा चुकाए गए कर) भी उतने ही ज़रूरी होते हैं। हम कितना कर चुकाएं, कम और ज़्यादा आय वालों के द्वारा चुकाए जाने वाले करों में कितना अंतर हो और उस धन राशि से सरकार क्या-क्या व्यवस्था करें और वह व्यवस्था किन किन को निःशुल्क और किन किन को सशुल्क मिले - यह सब एक लम्बी और जटिल प्रक्रिया से तै होता है। इस प्रक्रिया की बहुत सारी चीज़ों से बहुतों को तरह-तरह की असहमतियां होती हैं, और यह अस्वाभाविक भी नहीं है। इन्हीं असहमतियों और आलोचनाओं को ध्यान में रखकर प्रक्रियाओं में निरंतर बदलाव भी किया जाता रहता है, और यह सदा ज़ारी रहने वाली प्रक्रिया है। सरकार जनता से प्राप्त धन से कौन-कौन सी व्यवस्था करे यह बात प्रायः उस सत्तारूढ़ राजनीतिक दल की रीति नीति के आधार पर तै होती है। अगर दल के सोच में खुलापन और उदारता हो तो वह दूसरे दलों की बात भी सुनता है और अगर दल का सोच संकीर्ण और आत्म केंद्रित होता है तो वह औरों की सारी बातों को अनसुना करते हुए अपनी ही चलाता है।

जनता से करों के रूप में प्राप्त धन राशि से सरकार को जनता के लिए कौन-कौन सी सुविधाओं की व्यवस्था प्राथमिकता के आधार पर करनी चाहिए, जब हम इस बात पर विचार करना प्रारम्भ करते हैं तो जो बातें सबसे पहले ध्यान में आती हैं वे हैं स्वास्थ्य एवं चिकित्सा, शिक्षा, पेय जल, बिजली, सड़क और कानून व्यवस्था। इस सूची में और काफी कुछ जुड़ सकता है, लेकिन मेरे विचार में ये चीज़ें तो सबसे पहले ज़रूरी हैं। इन सब चीज़ों पर अधिक विस्तार से विचार हो सकता है कि किस स्तर की चिकित्सा सुविधा ज़रूरी है, किस स्तर की व्यवस्था सरकार सबसे पहले करे आदि। उस विस्तार में न जाते हुए हम एकदम प्रारम्भिक स्तर की व्यवस्थाओं की अपेक्षा अगर अपनी सरकारों से करें, तो उसे अनुचित अपेक्षा नहीं माना जाना चाहिए।

यह कहना हमारी अहसान फरामोशी का परिचायक होगा कि इन क्षेत्रों में हमारी सरकारों ने कुछ नहीं किया है। राजनीतिक स्वार्थों के कारण भले ही चाहे जो कह दिया जाए, यह सच है कि आज़ादी के बाद के इन बरसों में सारे ही क्षेत्रों में हमारी विभिन्न सरकारों ने काफी काम किया है। बात चाहे चिकित्सा की हो, शिक्षा की हो, बिजली पानी की हो, सड़कों की हो - 1947 में हम जहां थे वहां से बहुत आगे पहुंचे हैं। लेकिन संतुष्ट होकर बैठ जाना इंसान की फ़ितरत नहीं है। वह हमेशा चाहता है कि जो उसे मिल चुका है उससे ज़्यादा मिले। यही बात प्रगति और प्रयासों के लिए प्रेरित भी करती है। यहीं यह बात ध्यान देने योग्य है कि वर्तमान राजस्थान सरकार ने अपने नागरिकों के लिए चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवाओं का खूब विस्तार किया है। ऐसा ही विस्तार शिक्षा सेवाओं का भी हुआ है। सरकार का प्रयास है कि हर नागरिक को निःशुल्क ज़रूरी चिकित्सा सुविधा मिल जाए। इस संकल्प की जितनी तारीफ़ की जाए कम है।

लेकिन इधर जो समाचार विभिन्न माध्यमों में आए हैं वे यह बताने को पर्याप्त हैं कि सरकार के इन नेक इरादों को उसी का तंत्र पलीता लगाने में भी लगा हुआ है। हाल में यह समाचार बहुत प्रमुखता से आया है कि बहुत सारी सरकारी डिस्पेंसरियां डॉक्टर विहीन हैं जबकि बड़े शहरों में ज़रूरत से ज़्यादा डॉक्टर पदस्थापित हैं। अगर तबादले सम्भव नहीं हुए तो प्रतिनियुक्ति के माध्यम से डॉक्टरों ने बड़े शहरों में रहने का जुगाड़ बिठा लिया। राज्य के चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री ने यह घोषणा की कि वे प्रतिनियुक्ति का खेल ख़त्म करके रहेंगे और अगले ही दिन यह बात पढ़ने को मिली कि खुद उन्होंने बहुत सारी प्रतिनियुक्तियां कर रखी हैं जिनमें उनके निकट सम्बंधी और अन्य सजातीय निकटस्थ लोग शामिल हैं। प्रतिनियुक्तियों का यह खेल केवल चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग में ही हो ऐसा नहीं है। शायद ही कोई सरकारी विभाग इस बीमारी से अछूता हो। मैं जब कॉलेज शिक्षा विभाग में कार्यरत था तो अपने पद की वजह से मैं यह जान पाया कि बहुत सारे लोगों ने तो अपनी पूरी की पूरी तीस-पैंतीस साल की नौकरी बिना एक भी दिन किसी कॉलेज में जाकर पढ़ाये पूरी कर दी। वे एक के बाद दूसरी प्रतिनियुक्ति पाते रहे और अपने मनचाहे शहर में जमे रहे। यह खेल अब भी ज़ारी है। हर सरकार आते ही गर्व पूर्वक घोषणा करती है कि वह यह तमाशा बंद कर देगी, और फिर खुद इसी तमाशे की सूत्रधार बन जाती है। हाल में एक राजनेता ने कहा भी है कि प्रतिनियुक्तियां ज़ारी रखना उनकी राजनीतिक मज़बूरी है। सोचने की बात यह है कि उनकी राजनीतिक मज़बूरी का खामियाज़ा बेचारी जनता को उठाना पड़ता है। आपने डिस्पेंसरी खोल दी, वहां डॉक्टर व अन्य स्टाफ भी नियुक्त कर दिया लेकिन वे सब या उनमें से अधिकांश प्रतिनियुक्ति करवा कर वहां जाने से बच गए। जनता रोती है तो रोती रहे।

जन कल्याणकारी होने का दावा करने वाली सरकार कम से कम इतना तो तुरंत कर सकती है कि हर अस्पताल के शीर्ष अधिकारी पर यह ज़िम्मेदारी आयद करे कि वहां सब कुछ चुस्त-दुरुस्त उसे रखना है और अगर इसमें कोई भी कमी पाई जाएगी तो इसका ज़िम्मेदार उसे व्यक्तिशः मान कर दण्डित किया जाएगा।

जब बात चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग की चल निकली है तो यह भी कहना ज़रूरी है कि सरकारें बड़ी-बड़ी घोषणाएं करती हैं, बड़े-बड़े अस्पताल बनाती हैं, उन्हें खूब सारा बजट देती हैं लेकिन जब आप वहां जाते हैं तो पाते हैं कि वहां मामूली से मामूली सुविधा भी नहीं है। हाल में अखबारों में आया है कि राज्य के सबसे बड़े अस्पताल एस.एम. एस. में अनेक जांच सुविधाएं सुलभ नहीं हैं, क्योंकि सम्बद्ध मशीनें खराब पड़ी हैं। जब कोई सम्वाददाता अस्पताल के शीर्ष अधिकारी से सम्पर्क करता है तो वह अधिकारी चौंकता है, फिर उसी से पूछता है कि 'अच्छा! क्या ऐसा है?' और फिर कहता है कि मैं दिखवाता हूं। अगर यह नहीं तो वह बजट की कमी का गाना गा देता है या कोई तकनीकी दिक्कत बता कर अपनी असहायता ज़ाहिर कर देता है। मसलन जिस कम्पनी को सम्बद्ध मशीनों के रख-रखाव का ठेका दिया हुआ है वह ठीक से काम नहीं कर रही है। मामला ख़त्म। बेचारा साधन विहीन रोगी किसी निजी अस्पताल में जाकर जांच करवा लेता है। इस सबके साथ बहुत सारी अप्रिय बातें भी होती हैं। यह ज़रूरी नहीं कि वे अप्रिय बातें सदा ही सच हों, लेकिन उनकी सच्चाई की सम्भावनाओं को नकारा भी नहीं जा सकता। इन अप्रिय बातों में से एक है सरकारी अस्पतालों के स्टाफ़ की निजी अस्पतालों के प्रबंधन से साठ-गांठ। यह समझने के लिए आपका बहुत विद्वान होना ज़रूरी नहीं है कि सरकारी अस्पतालों की मशीनों के खराब रहने का सबसे बड़ा लाभ किसको मिलता है! अभी तो हद्द ही हो गई है। एक समाचार के अनुसार राज्य के इस अस्पताल में डिफ्यूज़नटेस्ट और नाइट्रिकसाइटटेस्ट मशीन दो साल से बंद पड़ी है। इसी तरह स्लीपस्टेडी मशीन छह माह से बंद पड़ी है। इसे लापरवाही न कहें। यह तो आपराधिक लापरवाही है। दो साल से मशीन के बंद पड़े रहने के लिए क्या किसी बड़े को ज़िम्मेदार ठहरा कर दंडित किया जाएगा? सरकारी बजट को पलीता लगता रहेगा, और जनता उसके बावज़ूद आधारभूत सुविधाओं के लिए तरसती रहेगी।

अब सवाल यह है कि जनता का भला सोचने का दावा करने वाली सरकारें अपने अधिकारियों की ग़ैर ज़िम्मेदारी के आगे इतनी असहाय क्यों नज़र आती हैं? अगर एक अस्पताल की मशीनें लम्बे समय तक खराब पड़ी रहती हैं तो क्या उसके शीर्ष स्टाफ को इसके लिए दंडित नहीं किया जाना चाहिए? क्या कभी ऐसा होता है? क्या कोई भी सरकार यह देखती है कि उसके पास जितना स्टाफ है उसका तर्क संगत बंटवारा हो और छोटी और बड़ी हर जगह समुचित स्टाफ उपलब्ध हो। अगर कमी हो, हालांकि सवाल यह भी है कि कमी हो ही क्यों, तो उसका असर सब पर समान रूप से पड़े। ऐसा न हो कि शहरों में तो इफरात हो और गांव तरसते रह जाएं। अभी यही हो रहा है। जन कल्याणकारी होने का दावा करने वाली सरकार कम से कम इतना तो तुरंत कर सकती है कि हर अस्पताल के शीर्ष अधिकारी पर यह ज़िम्मेदारी आयद करे कि वहां सब कुछ चुस्त-दुरुस्त उसे रखना है और अगर इसमें कोई भी कमी पाई जाएगी तो इसका ज़िम्मेदार उसे व्यक्तिशः मान कर दण्डित किया जाएगा। अगर सरकार ईमानदारी से इतना भी कर देगी तो हालात बदलने में देर नहीं लगेगी। और हां, यह बात हालांकि शुरू तो चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग की चर्चा से हुई थी, ऐसा शिक्षा, सड़क, बिजली पानी सुरक्षा सभी महकमों में किया जाना चाहिए। क्या यह बात शर्मनाक नहीं है कि लम्बा-चौड़ा महकमा होने के बावज़ूद जो सड़कें बारिश में टूटती हैं वे होली तक भी ठीक नहीं होती हैं! सड़कों की बदहाली सबको नज़र आती है सिवा सम्बद्ध विभाग के अफसरों के।

मैं बहुत बार सोचता हूं कि प्रजातंत्र अन्य देशों में भी है। वहां के राजनेताओं के भी राजनीतिक हित ज़रूर होते होंगे। छोटे-मोटे समझौते वे भी करते होंगे। लेकिन क्या वजह है कि अन्यत्र हालात उतने खराब नहीं हैं जितने हमारे यहां हैं? क्या हम इसी तरह बदहाली में ही अपनी ज़िंदगी बिता देंगे? क्या ये हालात कभी नहीं बदलेंगे?

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

क्यूरेबल कैंसर

2014 में मैने भगवान माहावीर कैंसर अस्पताल जयपुर, जोइन किया। कैंसर का विशिष्ट अस्पताल। साठ के दशक में जब मैं कोलकात्ता मेडिकल कॉलेज में शिक्षारत था, तब से आज में कितना कुछ बदल गया है। आमाशय, आंत, गर्भाशय, स्तन या थाइरॉइड, सबकी सर्जरी तब सर्जरी जनरल सर्जन ही करते थे। तब यही प्रमुख व अधिकांश जगह कैंसर का एक मात्र उपचार होता था। हमारे मेडिकल कॉलेज में भी, जहां मैं सर्जरी में कार्यरत था। तब कीमोथैरेपी और विकिरण थैरेपी न इतनी विकसित थी और न ही उपलब्ध। आज हर अंग-विशेष के कैंसर सर्जन उपलब्ध हैं। विकिरण थैरेपी भी काफी सटीक और सार्थक हो गई है। कैंसर का आकार, प्रकार, आचरण व फैलाव आंकने की अति उन्नत विधियां आज उपलब्ध हैं।

कैंसर, जान लेवा रोग। इलाज, जान की जोखिम। मरीज की लाचारी। चिकित्सक की मजबूरी। इलाज अत्यंत महंगा। इलाज की सफलता अनिश्चित। भय, भ्रम, बेचारगी। कुल मिला कर आग का दरिया तैर कर जाना। आज स्थिति इतनी भयावह और निराशाजनक नहीं है। आज अनेक कैंसर उपचार साध्य हैं। सर्वथा ठीक होने वाले क्योरेबल कैंसर भी। तब के कई, लाइलाज कैंसर आज उपचार साध्य हो गये हैं। कैंसर के उपचार में जहां आशातीत विकास हुआ है वहीं संसाधनों की आवश्यकता भी बढी है। संसाधान जुटाना और कैंसर चिकित्सा का लाभ जनसाधारण तक पहुंचाना आज की चुनौती है ।

बच्चों के रक्त कैंसर - एक्यूट लिम्फो ब्लास्टिक ल्यूकीमिया, एक्यूट प्रोमाईलोसाइटिक ल्यूकीमिया, हाजकिन्स लिम्फोमा - जो घातक होते थे, आज सर्वथा उपचार साध्य हैं। हंसता-खेलता बच्चा। बुखार, लाल चकत्ते, रक्त स्राव। मां-बाप को विश्वास ही नहीं हुआ जब डॉक्टर ने बताया, रक्त कैंसर है। दोनों का मुंह लटक गया। चिंता, भय, आशंका। मां ने बच्चे को सीने से लगा लिया। रुआंसी हो गई। कितनी राहत मिली जब आश्वस्थ करते हुए डॉक्टर ने बताया कि इलाज से बच्चा बिलकुल ठीक हो जायेगा। कहीं डॉक्टर ढाढस बांधने को ही तो ऐसा नहीं कह रहा? नहीं, बच्चों के इस कैंसर का सार्थक इलाज आज उपलब्ध है। ढाढस बंधा। पूछा, खर्चा? इलाज लम्बा चलेगा, 4-5 लाख। सब्जी फल का ठेला लगाने वाले बाप ने महिला और बच्चे की ओर देखा और नजरे झुका लीं। लाचारी, बेचारगी, बेबसी। जी, कह कर चैम्बर से बाहर आ गये। डॉक्टर क्या करे?

उपचार साध्य कैंसर ग्रस्त बच्चा। केवल इसलिए मौत के मुंह में चला जायेगा क्योंकि उसके लाचार मां-बाप खर्चा वहन नहीं कर सकते। क्या समाज के लिए यह शर्म की बात नहीं है? विचारणीय मुद्दा यही था। समाज में सक्षम लोग हैं। लोगों में करुणा है। परोपकार की भावना है, इच्छा है, सामर्थ्य है। परोपकार धर्म है। अतः एक प्रोजेक्ट बनाया। डोनेट ए लाइफ प्रोजेक्ट - जीवन दान परियोजना। बच्चों के चिन्हित क्योरेबल रक्त कैंसर के उपचार के लिए 5 लाख से एक बच्चे को जीवन मिल सकता है। वह घातक कैंसर से लड़कर एक सक्षम नागरिक का जीवन जी सकता है।

आर्थिक रूप से विवश बच्चों के लिए भगवान महावीर कैंसर चिकित्सालय, जयपुर द्वारा जीवनदान परियोजना के तहत इन बच्चों को सर्वथा निःशुल्क उपचार उपलब्ध कराया गया।

इन उपचार साध्य कैंसर का इलाज क्यों इतना मंहगा, कष्टदायक और जटिल हैं, इसकी गंभीरता केस विशेष में किए गये उपचार से ही समझी जा सकती है। बिना इसे समझे डॉक्टरों की उपचार जन्य विवशता नहीं समझी जा सकती। अनायास भ्रम और भय पैदा होता है।

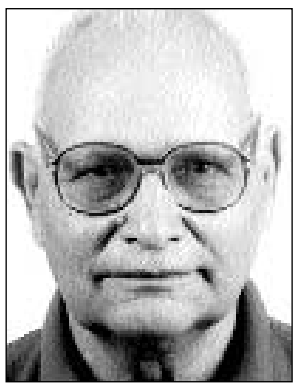

डॉ. श्रीगोपाल काबरा

एक केसः फलों का ठेला चलाने वाले अलवर, राजस्थान, निवासी प्रवीन कुमार का 3 वर्षीय पुत्र मास्टर नवीन (नाम बदले हुए)। एक माह से बार-बार बुखार और शरीर में गठानें। स्थानीय अस्पताल में इलाज से लाभ न होने और रक्त परीक्षण के बाद कैंसर की आशंका जताने पर बच्चे को कैंसर अस्पताल लेकर आये। यहां बुखार व खून की कमी (एनिमीया) का इलाज चला और सभी जांचें हुईं। रक्त परीक्षण पर कैंसर के लक्षण पाये गये। बोनमेरो (अस्थिमज्जा) के परीक्षण पर अक्यूट लिम्फोब्लॉस्टिक ल्यूकीमिया का निदान हुआ। यह अस्थिमज्जा का एक कैंसर होता है। अक्यूट अर्थात तीव्र गति का कैंसर। उचित एवं समय पर ईलाज न करवाया जाये तो प्राण घातक।

इस बालक में लाल रक्तकण कम बनने के कारण एनीमिया, प्लेटलेट्स कम बनने के कारण रक्तस्राव और रक्षक सफेद कण न बनने से बार-बार संक्रमण। कैंसर का इलाज तो अलग, पहले अगर इनका इलाज न हो तो ही जान की जोखिम होती है।

आकलन हुआ कि यह उपचार साध्य, कम जोखिम वाला रक्त कैंसर है। (बी-एएलएल स्टैण्डर्ड रिस्क)। चिकित्सकों के अनुसार 2002 में मोडिफाइड मल्टीड्रग बीएफएम 95 प्रोटोकॉल से इलाज करना तय हुआ।

- **डोनेट ए लाइफ प्रोजेक्ट के तहत अगस्त 2014 से मार्च 2022 तक 141 मरीजों का इलाज चला जिसमें से 125 कैंसर मुक्त हैं**

इलाज अत्यन्त खर्चीला, अनुमानित लागत 5 लाख। ठेला चलाने वाले प्रवीन कुमार ने राहत की सांस ली जब बताया गया कि इस उपचार साध्य कैंसर से मुक्ति की सुविधा अस्पताल में जीवनदान परियोजना के अन्तर्गत निःशुल्क उपलब्ध है।

पहले इंडक्शन उपचार के बाद रक्त परीक्षण पर कैंसर कोशिकाओं का रक्त से विलुप्त होना पाया गया। अर्थात् उपचार सार्थक था। कैंसर कोशिकायें रक्त से तो विलुप्त प्रायः थीं लेकिन चिकित्सकों को मालूम है कि ये कोशिकायें अस्थिमज्जा और अन्यत्र, विशेषकर मस्तिष्क में छिपी हो सकती हैं। अतः कुछ सप्ताहों के विराम के बाद उन परोक्ष कैंसर कोशिकाओं को नष्ट करना सुनिश्चित करने के लिये कन्सोलिडेशन या इन्टेन्सिफिकेशन उपचार प्रतिदिन के हिसाब से दो माह तक चला। तंत्रिका तंत्र (मस्तिष्क व सुषुम्ना) में छुपी कैंसर कोशिकाओं को नष्ट करने के लिए मस्तिष्क तरल सीएसएफ में कैंसर रोधक दवाइयाँ डाली गईं। दो सप्ताह के विराम के बाद उपचार की सार्थकता बरकरार रखने के लिए आरम्भ हुआ लम्बा कैंसर रोधक टेबलेट्स से मैन्टीनेन्स उपचार, जो एक वर्ष से अधिक चला।

इस उपचार के दौरान कई उतार-चढ़ाव सामने आये। एनिमीया, प्लेटलेट्स की कमी से रक्तस्राव, संक्रमण, उल्टी-दस्त आदि हुए, सघन इलाज चला जिसका बच्चे ने बहादुरी से मुकाबला किया। चिन्ता आतुर, अनहोनी की आशंका ग्रस्त माता-पिता ने बच्चे के साथ रात-दिन काटे। बच्चा अन्ततः कैंसर मुक्त हुआ।

अगस्त 2014 से मार्च 2022 तक 9 साल में 189 बच्चे निःशुल्क उपचार के लिए पंजीकृत हुए। 48 विभिन्न कारणो से परियोजना के बाहर हो गये। 141 का इलाज चला जिसमें से 125 कैंसर मुक्त हैं और 16 नये केसों का इलाज चल रहा है।

एक और प्रोजेक्ट फ्रीडम फ्रोम कैंसर- कैंसर मुक्ति योजना - वयस्कों के रक्त कैंसर क्रोनिक माइलोइड ल्यूकीमिया के निःशुल्क उपचार के लिए चलाया गया। इस कैंसर में इमेंटिनिब नामक गोली के नियमित सेवन, जो एक टार्गेट थेरेपी है, से रोगी सर्वथा कैंसर मुक्त रहता है और सामान्य जीवन यापन करता है। अगस्त 2015 से मार्च 2022 तक 8 साल में 155 रोगियों ने इस सतत् चलने वाले उपचार का लाभ लिया और वे सभी कैंसर मुक्त सामान्य जीवन जी रहे हैं।

अन्य उपचार-साध्य, बच्चों और महिलाओं के कैंसरों के लिए भी योजनाएं चल रही हैं। उपचार साध्य कैंसर ग्रस्त रोगी आर्थिक अभाव में उपचार से वंचित न रहे, ऐसे प्रयास सराहनीय हैं। कैंसर उपचार में आस्था जागती है। भ्रम और भय दूर होते हैं। इस में अपनी सामर्थ्य अनुरूप योगदान बड़ा आत्म सुख देता है। संवेदना का सुख। यूं भी अन्त में क्या साथ जाता है-

इकट्ठे गर, जहां के जर सभी मुल्कों के माली थे,
सिकंदर जब गया दुनियां से दोनों हाथ खाली थे।

- डॉ. श्रीगोपाल काबरा
वरिष्ठ चिकित्सक, जयपुर

सरकारी व निजी अस्पतालों में मरीजों की भीड़ बढ़ी

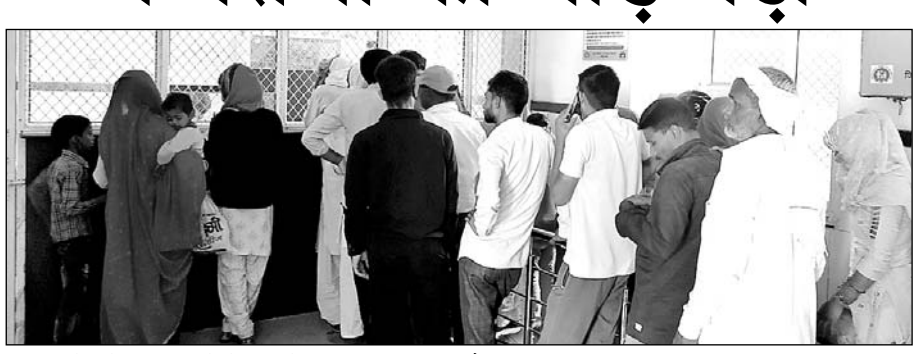

पावटा क्षेत्र के अस्पतालों में मरीजों की भीड़ उमड़ रही है।

पावटा, (निसं)। पावटा उपखंड व आस-पास के क्षेत्रों में सरकारी व निजी अस्पतालों में इन दिनों विभिन्न बीमारियों से पीड़ित लोग उपचार के लिए आ रहे हैं।

स्थानीय सुंदरी देवी राजकीय सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र प्रभारी डॉ. देवेंद्र शर्मा व निजी गुप्ता हॉस्पिटल के डॉ. रवि गुप्ता, अंजलि गुप्ता ने बताया कि में इन दिनों मरीजों की खासी भीड़ देखने को मिल रही है। सुबह-शाम ठंड व दिनभर मौसम गर्म रहने से शारीरिक तापमान काफी प्रभावित हो रहा है। इन मौसमी हालातों की अनदेखी आमजन पर भारी पड़ रही है।

- **अस्पतालों में बुखार, वायरल व सर्दी-जुकाम के मरीजों की कतारें लगी हैं**

इन दिनों अस्पतालों में बुखार, वायरल व सर्दी-जुकाम के मरीजों की संख्या में इजाफा होने से अस्पतालों में कतारें लगी हैं। वहीं डॉ. एस के वर्मा, डॉ. अशोक बाज्या, प्रागपुरा पीएचसी डॉ. सचिन शर्मा, मैड सीएचसी डॉ. दयाराम जाट ने बताया कि बदलता मौसम विशेषकर बच्चों, बुजुर्गों व विभिन्न प्रकार की बीमारियों से प्रभावित मरीजों के लिए परेशानियों का सबब बन सकता है। बदलते मौसम में खानपान, पहनावा व रहन-सहन संबंधी थोडी लापरवाही ही भारी पड़ रही है। ज्यादातर बच्चे रोगों की चपेट में आ रहे हैं।

जलशक्ति मंत्री शेखावत वर्ल्ड वाटर समिट में भारत का प्रतिनिधित्व करेंगे

जोधपुर, (कासं)। स्थानीय सांसद केंद्रीय जलशक्ति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत 21 मार्च से सेनेगल की राजधानी डैकर में शुरू हो रहे वर्ल्ड वाटर समिट में भारत का प्रतिनिधित्व करेंगे। केंद्रीय मंत्री शेखावत ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में दुनिया की सबसे बड़ी पेयजल योजना (जल जीवन मिशन) भारत में चल रही है। इस योजना को लेकर दुनिया के अन्य देश हमसे सीखें और विकासशील देश इसका अनुसरण कर सकें, इसे लेकर भी समिट में चर्चा होगी।

केंद्रीय मंत्री शेखावत ने कहा कि वर्ल्ड वाटर फोरम एक ऐसा प्लेटफॉर्म है, जिसमें दुनिया भर में बढ़ते जल संकट को लेकर विचार-विमर्श किया जाता है। आने वाले समय में किस तरह से पानी की समस्याओं का समाधान किया जा सकता है, इस पर चर्चा होती है। जल संकट से जुड़ी चुनौतियों को समझकर क्या मार्ग हो सकता है? एक-दूसरे के अनुभव से दुनिया के सभी देश सीख सकें और आगे बढ़ सकें, इस दिशा में विचार-विमर्श होता है।

- **आज से सेनेगल की राजधानी डैकर में शुरू होगी समिट**
- **प्लेटफॉर्म पर दुनिया भर में बढ़ते जल संकट को लेकर विचार-विमर्श किया जाता है**

केंद्रीय मंत्री ने कहा कि भारत का प्रतिनिधित्व करने का मुझे अवसर मिला है। तीन दिवसीय कार्यक्रम में दुनियाभर में पानी से जुड़े हुए और पानी पर काम करने वाले लोगों के साथ बैठकर भारत का पक्ष रखूंगा। दुनिया को बताऊंगा कि किस तरह से भारत ने जल प्रबंधन के क्षेत्र में काम किया है।

शीतला माता का लक्खी मेला 24-25 मार्च को

चाकसू, (निसं)। कस्बे के शील की डूंगरी स्थित शीतला माता मंदिर में 24-25 मार्च को दो दिवसीय लक्खी मेला भरेगा, मेले के सफल आयोजन के लिए मंदिर समिति एवं प्रशासन ने व्यापक तैयारियां शुरू कर दी हैं। जयपुर दरबार द्वारा निर्मित यह मंदिर क्षेत्र के लोगों के लिए आस्था का केंद्र बना हुआ है। आज भी पहला भोग राज परिवार द्वारा भेजे गए प्रसाद से ही लगाया जाता है।

कस्बे में स्थित माता के मंदिर पर साल भर भक्त दर्शन के लिए दूर-दूर से आते हैं। यहां पर होली से ठीक 8 दिन बाद चैत्र माह के शीतलाष्टमी पर दो दिवसीय लक्खी मेला भरता है। इस स्थान को शील की डूंगरी व शीतला माता के नाम से जाना जाता है।

यहां जयपुर के अलावा यहां टोंक, निवाई, देवली, लालसोट, दौसा, रामगढ़ पचवारा, कोटखावदा, फागी, बस्सी, सांगानेर, जमवारामगढ़, आदि आस-पास के इलाकों से बड़ी संख्या में लोग नाचते गाते पहुंचते हैं। मेले में कई पैदल यात्री भी आते हैं। करीब 300 मीटर की सीढ़ियां चढ़ने के बाद जैसे ही माता के दर्शन होते हैं भक्तों को काफी आनंद की अनुभूति होती है। मंदिर तक जाने के लिए सीढियों का रास्ता है। शील की डूंगरी पर स्थित माता का यह मंदिर 500 वर्ष पुराना बताया जाता है।

बच्चों सहित बड़ों के मनोरंजन के लिए मेले में झूला, मौत का कुआं आदि आकर्षण का मुख्य केंद्र रहेंगे, आस-पास सहित दूर के क्षेत्रों से भी लोग लाखों की संख्या में यहां पहुंचेंगे

- **शीतला माता के मंदिर में आरोग्य और सुख शांति का मिलता है वरदान**
- **आज भी पहला भोग राज परिवार द्वारा भेजे गए प्रसाद से ही लगाया जाता है**

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 21 मार्च, 2022

चैत्र मास कृष्ण पक्ष, तृतीया तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2078, स्वाती नक्षत्र रात्रि 9:31 तक, व्याघात योग दिन 3:54 तक, विष्टिकरण प्रातः 8:21 तक, चन्द्रमा तुला राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-मीन, चन्द्रमा-तुला, मंगल-मकर, बुध-कुम्भ, गुरू-कुम्भ, शुक्र-मकर, शनि-मकर, राहु-वृष, केतु-वृश्चिक राशि में।

आज यमघट योग रात्रि 9:31 से सूर्योदय तक है। भद्रा प्रातः 8:21 तक है। आज चतुर्थी तिथि का क्षय हुआ है। आज चतुरथी व्रत है। चन्द्रोदय जयपुर में रात्रि 9:32 पर होगा। आज विश्व सेना दिवस है।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः अमृत सूर्योदय से 8:04 तक, शुभ 9:34 से 11:04 तक, चर 2:04 से 3:34 तक, लाभ-अमृत 3:34 से सूर्यास्त तक।

राहूकालः 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 6:34, सूर्यास्त 6:34

मेष
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में प्रसन्नता और उत्सव जैसा माहौल रहेगा। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृष
मित्रों/रिश्तेदारों से चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ से राहत मिलेगी।

मिथुन
परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है। महत्वपूर्ण मामलों में दुविधा बनी रहेगी। आपसी ईर्ष्या-वैमनस्यता के कारण परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

कर्क
परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे।

सिंह
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिचितों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक विवादों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा।

कन्या
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक विवादों का निपटारा हो सकता है। अस्त-व्यस्त व्यावसायिक कार्य व्यवस्थित होने लगेंगे। परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे।

तुला
घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में प्रसन्नता-हर्षोल्लास का माहौल रहेगा। अतिथियों का आगमन बना रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

वृश्चिक
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि होगी। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है।

धनु
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी और व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

मकर
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

कुंभ
व्यावसायिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। आवश्यक व्यावसायिक खर्चों में वृद्धि हो सकती है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

मीन
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा टालना ठीक रहेगा।